

宗
因

圃

也
有

守
武

आपके

越
人

जापानी

芭
蕉

千
代
尼

一
茶

हाइकू

蕪
村



एकलव्य



आपके जापानी हाइकू

संचयन और अँग्रेज़ी से अनुवाद तेजी ग़ोवर
चित्र रानू टाइटस



एकलव्य



आपके जापानी हाइकू

AAPKE JAPANI HAIKU

संचयन और अँग्रेज़ी से अनुवाद: तेजी ग़ोवर

चित्र: रानू टाइटस

इस किताब में हमने अनुवादक के विशेष आग्रह पर वर्तनी सम्बन्धी हमारे मानकों को बदला है।

पहला संस्करण: जून 2006 (2000 प्रतियाँ)

पहला पुनर्मुद्रण: अक्टूबर 2008 (15,000 प्रतियाँ)

दूसरा पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2008 (30,000 प्रतियाँ)

तीसरा पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2008 (30,000 प्रतियाँ)

चौथा पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2008 (60,000 प्रतियाँ)

पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: अगस्त 2023 (3000 प्रतियाँ)

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

कागज़: 80 gsm नेचुरल शैड व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

ISBN: 978-81-87171-79-9

मूल्य: ₹ 35.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**

जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72

www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटेर्स, भोपाल; फोन: +91 755 258 7551

हाइकू...

ये हाइकू जापान देश की जानी-मानी कविताएँ हैं। जापानी भाषा में शायद दुनिया की सबसे नन्हीं कविताएँ। इनमें से कुछ कई सौ साल पहले लिखी गई थीं और कुछ सौ-एक साल पहले। हमने हर हाइकू के कई अँग्रेज़ी अनुवाद देखकर ये हाइकू आपके लिए हिन्दी में लाने की कोशिश की है। आप इस किताब में कुछ जापानी कवियों के नाम जापानी लिपि में देख सकते हैं। बाकी कवियों के नाम हम जापानी लिपि में नहीं जुटा पाए। इन्हें देखकर आप समझ जाएँगे कि यह 'चित्रलिपि' देखने में कितनी सुन्दर है। हमारी अपनी भाषाओं की लिपियाँ भी उन लोगों को बहुत सुन्दर लगती हैं जो उन्हें पढ़ नहीं सकते।

लेकिन ये हाइकू होते क्या हैं, इनमें खास बात क्या है? हम यहाँ ऐसी बहुत-सी बातों में से कुछ पर ही विचार करेंगे। प्रकृति के किसी सुन्दर दृश्य को देखकर जो भाव मन में पैदा होता है, उसे आप क्या कहेंगे? मन ही मन एक 'वाह' – एक ऐसा सुख जो आपको रुला तक सकता है। आप साँझ के बादलों और घर जाते पक्षियों को नमस्कार करते हैं। और एक ही साँस में आप कोई हाइकू कह देते हैं। जापानी भाषा ही ऐसी है कि यह हाइकू जैसी साँस उसमें आपको सुनाई पड़ती है।

लेकिन जैसे आप 'योग' में साँस लेने और छोड़ने के नियम का पालन करते हैं, वैसे हाइकू में भी। जापानी हाइकू में केवल तीन से दस शब्द होते हैं। अगर तीन खड़ी पंक्तियों में लिखें, ऊपर से नीचे की ओर, तो पहली पंक्ति में पाँच स्वर, दूसरी में सात, और तीसरी में फिर पाँच स्वर। यानी व्यंजन जितने भी हों स्वर कुल मिलाकर केवल सत्रह रहेंगे। दीर्घ स्वर को दो स्वर माना जाएगा। 'मीठी' शब्द में चार स्वर गिने जाएँगे।

लेकिन सत्रह स्वर वाले इस नियम का पालन अन्य भाषाओं में करना कठिन है – यानी जापानी भाषा में ‘टेलीग्राम’ या ‘तार’ की शैली अधिक सहज है।

लेकिन हम हर नन्ही जापानी कविता को हाइकू नहीं कह सकते। हाइकू के कुछ और भी प्यारे नियम होते हैं। घटना या दृश्य केवल एक होता है, और यह दृश्य अभी-अभी का होता है। एक और खास बात यह है कि हाइकू में मौसम का संकेत अक्सर रहता है। मौसम का संकेत देने वाले शब्द को ‘किगो’ कहते हैं। जैसे बादल जापान में गर्मी के मौसम का संकेत है और आलूचे के फूल नए वर्ष के पहले फूल होते हैं। तो ‘बादल’ और ‘आलूचा’ जापानी हाइकू में ‘किगो’ कहलाएँगे।

हाइकू जापानी कविता की उस परम्परा से आए हैं जिसमें कविता कई लोगों के काम को जोड़-जोड़कर बनती थी। जापानी में कविता के लिए शब्द भी ऐसा है – जुड़े हुए अंश। हाइकू की परम्परा में कविता सबका जी खुश करने के लिए लिखी जाती थी और मनुष्य को प्रकृति का अंग मानकर चलती थी। जापान के मशहूर कवि बाशो कहा करते थे –

चीड़ के पेड़ के बारे में चीड़ से सीखो,
सरकण्डों के बारे में सरकण्डों से।

और हम शायद यह भी कह सकते हैं कि हाइकू के बारे में हाइकू से सीखो... वे ओस-भीगे पैरों वाली चिड़िया की तरह आपके आँगन में कुछ लिख रहे हैं।

- तेजी ग्रोवर

子
規

शि
कि

उफ़! मैं सब खा गया
और उफ़! पेट का यह दर्द...
चोरी के हरे सेब।



立
圃

र्यू
हो

मैंने चन्द्रमा को उठाया
अपनी पानी की बालटी में
और उसे घास पर उड़ेल दिया।



鬼
貫

ओनित्सुया



मैं कहता हूँ
“आओ! आओ!” और जुगनू
उड़ें चले जाते हैं!



शिसएड-जो

सर्दी की तूफानी बारिश...
और मेरी मूरख छतरी
उलटा चलने लगी।

守
武

मोरिताके

अब नहीं मिलेंगे मित्र
खो गए हैं जंगल के पक्षी
बादलों में उड़ते हुए।



子
規

शि
कि

क्या शानदार दिन है
पूरे गाँव में कोई भी
कुछ नहीं कर रहा।



守
武

मोरिताके

झरा हुआ फूल
वापिस टहनी पर... अरे नहीं!
यह तो सफ़ेद तितली है।



शुसएन्

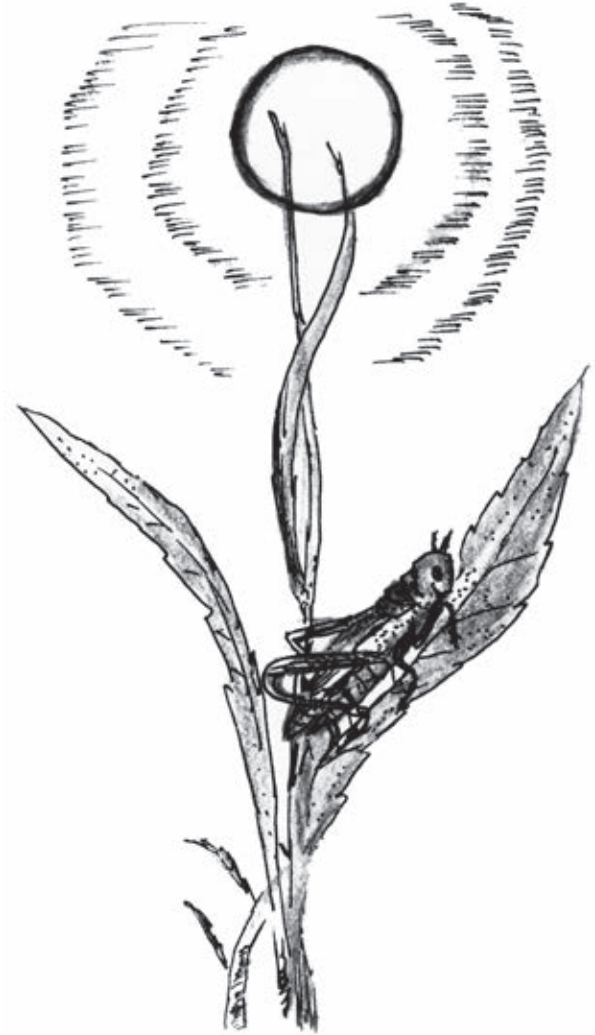
प्यारी तितलियो,
चीड़ की सुइयों से बचना
इस तेज़ हवा में।



越
人

एत्सुजिन्

सिर्फ़ एक चहकते
कीड़े ने मुझे बताया कि रात है,
इतना चमक रहा था चाँद।



子
規

शि
कि

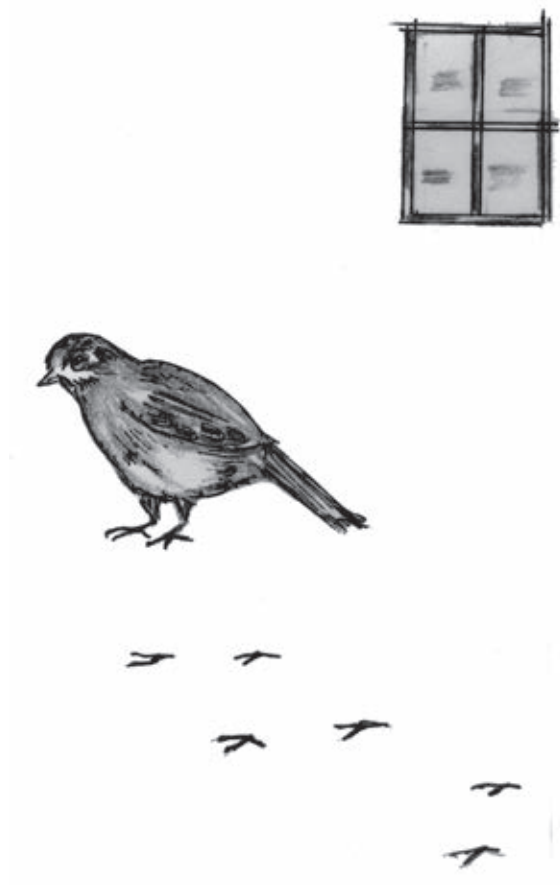
पत्तों से खाली है
यह अँधेरा पेड़...
लेकिन सितारे हज़ार हैं।



子
規

शि
कि

फिर आयी हो, गौरइया
मेरे साफ़-सुथरे आँगन में
अपने ओस-भरे पैरों से लिखने!



一
茶

इस्सा

चल यार, मुझसे खेल
माँ-बाप से छूटे
गौरइया के नन्हे बच्चे।



कूरु
कूरु

डुसुनु

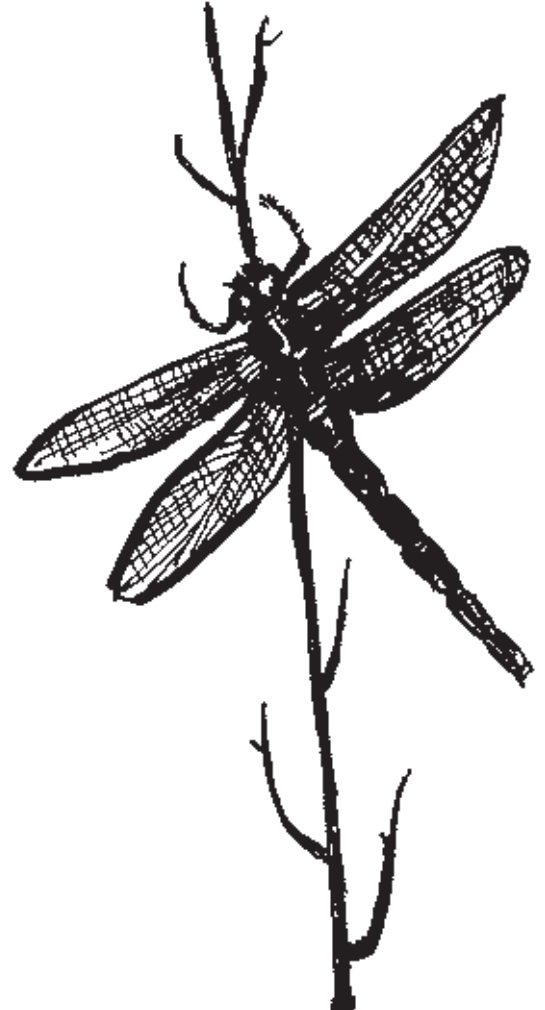
एक डूद डररश
डडी, और घुंघर
डनुड हु गडर।



千
代
尼

वियो-नि

तेज़ हवाओं के किस
देश में भटक रहे हो,
मेरे नन्हे शिकारी चिउरे?



漱
石

ओसएकि

पत्ते नहीं जानते
कौन-सा पत्ता पहले गिरेगा...
क्या हवा जानती है?



芭
蕉

बा
शो

उड़ने की कोशिश में
फुदकती, चहकती, छोटी-सी चिड़िया
हाय, कितना काम है तुझे!



—
茶

इस्सा

मेरे छोटे से गाँव में
मक्खियाँ भी नहीं डरतीं
बड़े आदमी को काटने से।



—
茶

इस्सा

चंचल टिड्डे
देखना... कहीं कुचल न देना
ओस के ये मोती।



अनाम

हाय, मैंने क्यों तोड़े
और क्यों नहीं तोड़े
वे नीले रंग के फूल!



秋
色

शूशिकि

सपने से उठकर भी
मैं रंग देखूँगा
आइरिस* के।

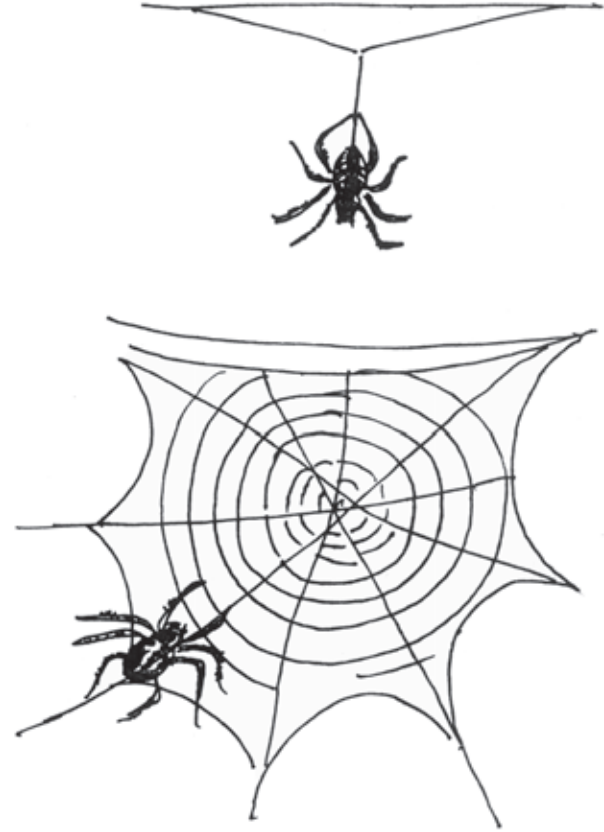
* एक किस्म के फूल



—
茶

इस्सा

डरो मत, मकड़ियो
इतना साफ़ कहाँ रखता हूँ
मैं अपना घर!



宗
因

सोइन्

जीवन

एक तितली जैसा है

वह कुछ भी क्यों न हो।



也
有

या
यु

मूरख पुतले
तुम्हारे बाँस के पैरों तले
पक्षी दाना चुग रहे हैं।



芭
蕉

बा
शो

मरता हुआ झींगुर...
कितना दम है
उसके गाने में।



漱
石

ओसएकि

तितली, मेरी कूची से बने चित्र
फूल नहीं हैं
सिर्फ़ उनकी छाया है।



燕
村

बुसोन्

नदी किनारे के पेड़
क्या तेरे फूलों के अक्स
सच में बह जाते हैं?



इस संकलन में शामिल कवि

आराकिदा मोरिताके (1472-1549)

नोनोगुचि र्यूहो (1594-1669)

निशियामा सोइन् (1605-1682)

मात्सुओ बाशो (1644-1694)

ओचि एत्सुजिन् (1656-1702)

उएजिमा ओनित्सुरा (1661-1738)

ओगावा शूशिकि (1669-1725)

योकोइ यायु (1701-1783)

चियो-नि (1703-1775)

योसा बुसोन् (1716-1783)

कोबायाशी इस्सा (1763-1827)

मासाओका शिकि (1867-1902)

नात्सुमे सोसएकि (1867-1916)

शिसएइ-जो

शुसएन्

और एक अनाम



एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई सालों से शिक्षा व जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं, जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें और पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ सालों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका चकमक के अलावा स्रोत (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) और संदर्भ (शैक्षिक पत्रिका) नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित व प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, नर्मदापुरम, पिपरिया, शाहपुर (बैतूल) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

宗因

一茶

守武

蕪村

芭蕉

也有

千代尼



越人

立圃

मूल्य: ₹ 35.00



एकलव्य

